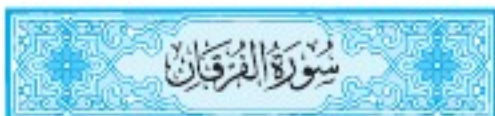


## सूरह फुर्कान - 25



### सूरह फुर्कान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 77 आयतें हैं।

- इस सूरह में उस का परिचय कराते हुए जिस ने फुर्कान उतारा है शिर्क का खण्डन तथा बह्यी और रिसालत से सम्बन्धित संदेहों को चेतावनी की शैली में दूर किया गया है।
- अल्लाह के एक होने की निशानियों की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया है।
- अल्लाह के भक्तों के गुण और मानव पर कुर्आन की शिक्षा का प्रभाव बताया गया है।
- अन्त में उन्हें चेतावनी दी गयी है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुर्आन के सावधान करने पर भी सत्य को नहीं मानते।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शुभ है वह (अल्लाह) जिस ने फुर्कान<sup>[1]</sup> अवतरित किया अपने भक्त<sup>[2]</sup> पर, ताकि पूरे संसार वासियों को सावधान करने वाला हो।
2. जिस के लिये आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा उस ने अपने लिये

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا

لِلَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا

- 1 फुर्कान का अर्थ वह पुस्तक है जिस के द्वारा सच्च और झूठ में विवेक किया जाये और इस से अभिप्राय कुर्आन है।
- 2 भक्त से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जो पूरे मानव संसार के लिये नबी बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुझे से पहले नबी अपनी विशेष जाति के लिये भेजे जाते थे, और मुझे सर्व साधारण लोगों की ओर नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुखारी, 335, सहीह मुस्लिम, 521)

कोई संतान नहीं बनायी। और न उस का कोई साझी है राज्य में, तथा उस ने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की फिर उस को एक निर्धारित रूप दिया।

3. और उन्होंने ने उस के अतिरिक्त अनेक पूज्य बना लिये हैं जो किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते, और वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं, और न वह अधिकार रखते हैं अपने लिये किसी हानि का और न अधिकार रखते हैं किसी लाभ का, तथा न अधिकार रखते हैं मरण और न जीवन और न पुनः<sup>[1]</sup> जीवित करने का।

4. तथा काफ़िरों ने कहा: यह<sup>[2]</sup> तो बस एक मन घड़त बात है जिसे इस<sup>[3]</sup> ने स्वयं घड़ लिया है, और इस पर अन्य लोगों ने उस की सहायता की है। तो वास्तव में वह (काफ़िर) बड़ा अत्याचार और झूठ बना लाये हैं।

5. और कहा कि यह तो पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं जिसे उस ने स्वयं लिख लिया है, और वह पढ़ी जाती हैं उस के समक्ष प्रातः और संध्या।

6. आप कह दें कि इसे उस ने अवतरित किया है जो आकाशों तथा धरती का भेद जानता है। वास्तव में वह<sup>[4]</sup> अति क्षमाशील दयावान् है।

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ  
فَقَدَرًا مَّعْدُودًا ۝

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ  
يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا  
وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا تَنْشُورًا ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا إِفْكُ  
إِفْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ فَقَدْ  
جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ۝

وَقَالُوا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَى  
عَلَيْهِ بَكْرَةً وَأَمِيلًا ۝

قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

1 अर्थात् प्रलय के पश्चात्।

2 अर्थात् कुर्आन।

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने।

4 इसी लिये क्षमा याचना का अवसर देता है।

7. तथा उन्होंने ने कहा: यह कैसा रसूल है जो भोजन करता है तथा बाजारों में चलता है? क्यों नहीं उतार दिया गया उस की ओर कोई फ़रिश्ता, तो वह उस के साथ सावधान करने वाला होता?
8. अथवा उस की ओर कोई कोष उतार दिया जाता अथवा उस का कोई बाग़ होता जिस में से वह खाता? तथा अत्याचारियों ने कहा: तुम तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो।
9. देखो! आप के संबंध में यह कैसी कैसी बातें कर रहे हैं? अतः वह कुपथ हो गये हैं, वह सुपथ पा ही नहीं सकते।
10. शुभकारी है वह (अल्लाह) जो यदि चाहे तो बना दे आप के लिये इस<sup>[1]</sup> से उत्तम बहुत से बाग़ जिन में नहरें प्रवाहित हों, और बना दे आप के लिये बहुत से भवन।
11. वास्तविक बात यह है कि उन्होंने ने झुठला दिया है क़्यामत (प्रलय) को, और हम ने तय्यार किया है उस के लिये जो प्रलय को झुठलाये भड़कती हुई अग्नि।
12. जब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी, तो सुन लेंगे उस के क्रोध तथा आवेग की ध्वनि को।
13. और जब वह फेंक दिये जायेंगे

وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ  
وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ لَوْلَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ  
فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ۝

أَوْ يُنْفَخِ إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا  
وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا  
مَّشْهُورًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا  
فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

تَبَرَّكَ الَّذِي إِِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ  
ذَلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ  
وَيَجْعَلُ لَكَ قُصُورًا ۝

بَلْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاعْتَدْنَا لِلْإِمْنِ كَذَبًا  
بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝

إِذَا رَأَوْهُمْ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا  
وَزَفِيرًا ۝

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُقَرَّنِينَ دَعَوْا

1 अर्थात् उन के विचार से उत्तम।



هَذَا لَكَ نُبُورًا ۝

उस के किसी संकीर्ण स्थान में बंधे हुये, (तो) वहाँ विनाश को पुकारेंगे।

14. (उन से कहा जायेगा): आज एक विनाश को मत पुकारो, बहुत से विनाश को पुकारो।<sup>[1]</sup>

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ نُبُورًا وَاجِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا  
كَثِيرًا ۝

15. (हे नबी!) आप उन से कहिये कि क्या यह अच्छा है या स्थायी स्वर्ग जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है, जो उन का प्रतिफल तथा आवास है?

قُلْ أَذَلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ  
الْمُتَّقُونَ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ۝

16. उन्हीं को उस में जो इच्छा वे करेंगे मिलेगा। वे सदावासी होंगे, आप के पालनहार पर (यह) वचन (पूरा करना) अनिवार्य है।

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ كَانَ عَلَى رَبِّكَ  
وَعْدًا مَسْئُولًا ۝

17. तथा जिस दिन वह एकत्र करेगा उन को और जिस की वह इबादत (बंदना) करते थे अल्लाह के सिवाय, तो वह (अल्लाह) कहेगा: क्या तुम्हीं ने मेरे इन भक्तों को कुपथ किया है अथवा वे स्वयं कुपथ हो गये?

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ  
فَيَقُولُ ءَأَنْتُمْ أَضَلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ  
هُمُ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۝

18. वे कहेंगे: तू पवित्र है! हमारे लिये यह योग्य नहीं था कि तेरे सिवा कोई संरक्षक<sup>[2]</sup> बनायें, परन्तु तू ने सुखी बना दिया उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि वह शिक्षा को भूल गये, और वह थे ही विनाश के योग्य।

قَالُوا سُبْحَنَكَ مَا كَانَ يُنْبِئُنَا أَنْ تَتَّخِذَ  
مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ  
وَأَبَاءَهُمْ حَتَّى نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا  
بُورًا ۝

1 अर्थात् आज तुम्हारे लिये विनाश ही विनाश है।

2 अर्थात् जब हम स्वयं दूसरे को अपना संरक्षक नहीं समझे, तो फिर अपने विषय में यह कैसे कह सकते हैं कि हमें अपना रक्षक बना लो?

19. उन्होंने<sup>[1]</sup> ने तो तुम्हें झुठला दिया तुम्हारी बातों में, तो तुम न यातना को फेर सकोगे और न अपनी सहायता कर सकोगे। और जो भी अत्याचार<sup>[2]</sup> करेगा तुम में से हम उसे घोर यातना चखायेंगे।
20. और नहीं भेजा हम ने आप से पूर्व किसी रसूल को, परन्तु वे भोजन करते और बाजारों में (भी) चलते<sup>[3]</sup> फिरते थे। तथा हम ने बना दिया तुम में से एक को दूसरे के लिये परीक्षा का साधन, तो क्या तुम धैर्य रखोगे? तथा आप का पालनहार सब कुछ देखने<sup>[4]</sup> वाला है।
21. तथा उन्होंने ने कहा जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते: हम पर फरिश्ते क्यों नहीं उतारे गये या हम अपने पालनहार को देख लेते? उन्होंने ने अपने में बड़ा अभिमान कर लिया है तथा बड़ी अवैज्ञा<sup>[5]</sup> की है।
22. जिस दिन<sup>[6]</sup> वे फरिश्तों को देख लेंगे

فَقَدْ كَذَّبْتُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ  
صَرْفًا وَلَا نَصْرًا وَمَنْ يَظْلِمْ مِنْكُمْ نُدِقْهُ  
عَذَابًا كَثِيرًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا أَنْهُمْ  
لِيَأْكُلُوا الطَّعَامَ وَيَمْشُوا فِي الْأَسْوَاقِ  
وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً  
أَتَصْبِرُونَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۝

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا  
أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ أَنْ نَدْرِي رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا  
فِي أَنْفُسِهِمْ وَتَوَعَّتْهُمْ آيَاتُنَا ۝

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ

- 1 यह अल्लाह का कथन है, जिसे वह मिश्रणवादियों से कहेगा कि तुम्हारे पूज्यों ने स्वयं अपने पूज्य होने को नकार दिया।
- 2 अत्याचार से तात्पर्य शिर्क (मिश्रणवाद) है। (सूरह लुक़्मान, आयत:13)
- 3 अर्थात् वे मानव पुरुष थे।
- 4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह चाहता तो पूरा संसार रसूलों का साथ देता। परन्तु वह लोगों की रसूलों द्वारा तथा रसूलों की लोगों के द्वारा परीक्षा लेना चाहता है कि लोग ईमान लाते हैं या नहीं और रसूल धैर्य रखते हैं या नहीं।
- 5 अर्थात् ईमान लाने के लिये अपने समक्ष फरिश्तों के उतरने तथा अल्लाह को देखने की माँग कर के।
- 6 अर्थात् मरने के समय। (देखिये: अन्फाल-13) अथवा प्रलय के दिन।

وَيَقُولُونَ حَبْرًا مَّخْجُورًا ۝

उस दिन कोई शुभ सूचना नहीं होगी  
अपराधियों के लिये। तथा वह कहेंगे:<sup>[1]</sup>  
बंचित बंचित है।

23. और उनके कर्मों<sup>[2]</sup> को हम ले कर  
धूल के समान उड़ा देंगे।

وَقَدْ مَنَّآلِ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً  
مَّنْثُورًا ۝

24. स्वर्ग के अधिकारी उस दिन अच्छे  
स्थान तथा सुखद शयनकक्ष में होंगे।

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ  
مَقِيلًا ۝

25. जिस दिन चिर जायेगा आकाश  
बादल के साथ<sup>[3]</sup> और फ़रिश्ते  
निरन्तर उतार दिये जायेंगे।

وَيَوْمَ تَشْقَى السَّمَاءُ بِالسَّحابِ وَنَزَلَ الْمَلَائِكَةُ نَزِيلًا ۝

26. उस दिन वास्तविक राज्य अति  
दयावान् का होगा, और काफ़िरों पर  
एक कड़ा दिन होगा।

أَلَمْ تَكُنْ يَوْمَئِذٍ إِلَى الرَّحْمَنِ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى  
الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۝

27. उस दिन अत्याचारी अपने दोनों हाथ  
चबायेगा, वह कहेगा: क्या ही अच्छा  
होता कि मैं ने रसूल का साथ दिया  
होता।

وَيَوْمَ يَعْصُ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ يَلَيْتَنِي  
اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۝

28. हाये मेरा दुर्भाग्य! काश मैं ने अमुक  
को मित्र न बनाया होता।

يَوَيْلَئِي لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ۝

29. उस ने मुझे कुपथ कर दिया शिक्षा  
(कुर्आन) से इस के पश्चात् कि मेरे  
पास आयी, और शैतान मनुष्य को  
(समय पर) धोखा देने वाला है।

لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي. وَكَانَ  
الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَدُوًّا ۝

1 अर्थात् वह कहेंगे कि हमारे लिये सफलता तथा स्वर्ग निषेधित है।

2 अर्थात् ईमान न होने के कारण उनके पुण्य के कार्य व्यर्थ कर दिये जायेंगे।

3 अर्थात् आकाश चीरता हुआ बादल छा जायेगा और अल्लाह अपने फ़रिश्तों के साथ लोगों का हिसाब करने के लिये हथ्र के मैदान में आ जायेगा। (देखिये सूरह, बक्रा, आयत: 210)



30. तथा रसूल<sup>[1]</sup> कहेगा: हे मेरे पालनहार! मेरी जाति ने इस कुर्आन को त्याग<sup>[2]</sup> दिया।

31. और इसी प्रकार हम ने बना दिया प्रत्येक का शत्रु कुछ अपराधियों को। और आप का पालनहार मार्गदर्शन देने तथा सहायता कर ने को बहुत है।

32. तथा काफिरों ने कहा: क्यों नहीं उतार दिया गया आप पर कुर्आन पूरा एक ही बार?<sup>[3]</sup> इसी प्रकार (इस लिये किया गया) ताकि हम आप के दिल को दृढ़ता प्रदान करें, और हम ने इस का क्रमशः प्रस्तुत किया है।

33. (और इस लिये भी कि) वह आप के पास कोई उदाहरण लायें तो हम आप के पास सत्य ला दें और उत्तम व्याख्या।

34. जो अपने मुखों के बल नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे, उन्हीं का सब से बुरा स्थान है तथा सब से अधिक कुपथ है।

35. तथा हम ने ही मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की और उस के साथ उस के भाई हारून को सहायक बनाया।

36. फिर हम ने कहा: तुम दोनों उस

وَقَالَ الرَّسُولُ يَرْبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ وَكَفَى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَلَا يُزَالُ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ۝

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْصِيلًا ۝

الَّذِينَ يُخْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ سَرَقَانَا وَأَصْلُ سَيْلٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ۝

فَقُلْنَا أَهْبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِالْآيَاتِنَا

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात इसे मिश्रणवादियों ने नहीं सुना और न माना।

3 अर्थात तौरात तथा इंजील के समान एक ही बार क्यों नहीं उतारा गया, आगामी आयतों में उस का कारण बताया जा रहा है कि कुर्आन 23 वर्ष में क्रमशः आवश्यकतानुसार क्यों उतारा गया।

فَذَرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ۝

जाति की ओर जाओ जिस ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया। अन्ततः हम ने उन को ध्वस्त निरस्त कर दिया।

37. और नूह की जाति ने जब रसूलों को झुठलाया तो हम ने उन को डुबो दिया और लोगों के लिये उन को शिक्षाप्रद प्रतीक बना दिया तथा हम ने<sup>[1]</sup> तय्यार की है अत्याचारियों के लिये दुःखदायी यातना।

وَقَوْمَ نُوحٍ لَمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ سُلَالًا  
آيَةً ۖ وَاعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

38. तथा आद और समूद एवं कूबे वालों तथा बहुत से समुदायों को इस के बीचा

وَعَادًا وَثَمُودَ وَأَصْحَابَ الرَّيِّسِ وَقُرُونًا بَيْنَ  
ذَلِكَ كَثِيرًا ۝

39. और प्रत्येक को हम ने उदाहरण दिये, तथा प्रत्येक को पूर्णतः नाश कर<sup>[2]</sup> दिया।

وَكُلًّا ضَرَبْنَاهُ الْأُمْتَالَ وَكُلًّا تَبَرْنَا تَنْبِيْرًا ۝

40. तथा यह<sup>[3]</sup> लोग उस बस्ती<sup>[4]</sup> पर आये गये हैं जिन पर बुरी वर्षा की गई, तो क्या उन्होंने ने उसे नहीं देखा? बल्कि यह लोग पुनः जीवित होने का विश्वास नहीं रखते।

وَلَقَدْ آتَيْنَا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أَمْطَرْنَا مَطَرًا سَوِيًّا  
أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا بَلْ كَانُوا لَا يَتَنَبَّهُونَ  
نُشُورًا ۝

41. और (हे नबी!) जब वह आप को देखते हैं, तो आप को उपहास बना लेते हैं कि क्या यही है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?

وَإِذَا رَأَوْا أَنْ يَنْجِذُوكَ مِنَ الْآهْرِ وَآهَدَاكَ الذِّكْرَ  
بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۝

42. इस ने तो हमें अपने पूज्यों से कुपथ

إِنْ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْبَةِ لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا

1 अर्थात् परलोक में नरक की यातना।

2 सत्य को स्वीकार न करने पर।

3 अर्थात् मक्का के मुशरिक।

4 अर्थात् लूत जाति की बस्ती पर जिस का नाम "सदूम" था जिस पर पत्थरों की वर्षा हुई। फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं की।



कर दिया होता यदि हम उन पर अडिग न रहते। और वे शीघ्र ही जान लेंगे जिस समय यातना देखेंगे कि कौन अधिक कुपथ है?

عَلَيْهَا وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ  
مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝

43. क्या आप ने उसे देखा जिस ने अपना पूज्य अपनी अभिलाषा को बना लिया है, तो क्या आप उस के संरक्षक<sup>[1]</sup> हो सकते हैं?

أَرَأَيْتَ مَنِ اخْتَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ أَأَنْتَ تَكُونُ  
عَلَيْهِ وَكِيلًا ۝

44. क्या आप सझते हैं कि उन में से अधिकतर सुनते और समझते हैं? वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ हैं।

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ  
إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝

45. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के पालनहार ने कैसे छाया को फैला दिया और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर<sup>[2]</sup> बना देता फिर हम ने सूर्य को उस पर प्रमाण<sup>[3]</sup> बना दिया।

أَلَمْ تَرَ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ  
سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝

46. फिर हम उस (छाया को) समेट लेते हैं अपनी ओर धीरे-धीरे।

فَنُقَبِّضُهَا إِلَيْنَا نَقْبِضُهَا بَيْرًا ۝

47. और वही है जिस ने रात्रि को तुम्हारे लिये वस्त्र<sup>[4]</sup> बनाया, तथा निद्रा को शान्ति, तथा दिन को जागने का समय।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا وَالنَّوْمَ مُبَاتًا  
وَجَعَلَ النَّهَارَ لِنُتْمُوًّا ۝

48. तथा वही है जिस ने भेजा वायुओं को शुभ सूचना बनाकर अपनी दया (वर्षा) से पूर्व, तथा हम ने आकाश

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ  
رَحْمَتِهِ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۝

1 अर्थात् उसे सुपथ दर्शा सकते हैं ?

2 अर्थात् सदा छाया ही रहती।

3 अर्थात् छाया सूर्य के साथ फैलती तथा सिमटती है। और यह अल्लाह के सामर्थ्य तथा उस के एकमात्र पूज्य होने का प्रमाण है।

4 अर्थात् रात्रि का अंधेरा वस्त्र के समान सब को छुपा लेता है।

से स्वच्छ जल बरसाया।

49. ताकि जीवित कर दें उस के द्वारा निर्जीव नगर को तथा उसे पिलायें उन में से जिन्हें पैदा किया है बहुत से पशुओं तथा मानव को।

لِنُحْيِيَ بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا  
وَأَناسٍ كَثِيرًا ۝

50. तथा हम ने विभिन्न प्रकार से इसे वर्णन कर दिया है, ताकि वे शिक्षाग्रहण करें। परन्तु अधिकतर लोगों ने अस्वीकार करते हुये कुफ़्र ग्रहण कर लिया।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ  
إِلَّا كُفُورًا ۝

51. और यदि हम चाहते तो भेज देते प्रत्येक बस्ती में एक सचेत करने <sup>[1]</sup> वाला।

وَلَوْ شِئْنَا لَبعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَذِيرًا ۝

52. अतः आप काफ़िरों की बात न मानें और इस (कुर्आन के) द्वारा उन से भारी जिहाद (संघर्ष) <sup>[2]</sup> करें।

لَا تُطِيعُ الْكُفْرِينَ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ  
جِهَادًا كَبِيرًا ۝

53. वही है जिस ने मिला दिया दो सागरों को, यह मीठा रुचिकार है, और वह नमकीन खारा, और उस ने बना दिया दोनों के बीच एक पर्दा <sup>[3]</sup> एवं रोक।

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُورًا وَهَذَا  
مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَحْجُورًا ۝

54. तथा वही है जिस ने पानी (वीर्य) से मनुष्य को उत्पन्न किया, फिर उस के वंश तथा ससुराल के संबन्ध बना दिये, आप का पालनहार अति सामर्थ्यवान है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا  
وَصِهْرًا وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۝

55. और वे लोग इबादत (बंदना) करते हैं अल्लाह के सिवा उन की जो न उन

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا

1 अर्थात् रसूल। इस में यह संकेत है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पूरे मनुष्य विश्व के लिये एक अन्तिम रसूल है।

2 अर्थात् कुर्आन के प्रचार-प्रसार के लिये भरपूर प्रयास करें।

3 ताकि एक का पानी और स्वाद दूसरे में न मिले।

को लाभ पहुँचा सकते और न हानि पहुँचा सकते हैं, और काफिर अपने पालनहार का विरोधी बन गया है।

56. और हम ने आप को बस शुभसूचना देने, सावधान करने वाला बनाकर भेजा है।

57. आप कह दें: मैं इस<sup>[1]</sup> पर तुम से कोई बदला नहीं मांगता, परन्तु यह कि जो चाहे अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले।

58. तथा आप भरोसा कीजिये उस नित्य जीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गान कीजिये उसकी प्रशंसा के साथ, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को।

59. जिस ने उत्पन्न कर दिया आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में, फिर (सिंहासन) पर स्थिर हो गया अति दयावान्, उसकी महिमा किसी ज्ञानी से पूछो।

60. और जब उन से कहा जाता है कि रहमान (अति दयावान्) को सज्दा करो, तो कहते हैं कि रहमान क्या है? क्या हम सज्दा करने लगेँ जिसे आप आदेश दें? और इस (आमंत्रण) ने उन को और अधिक भड़का दिया।

61. शुभ है वह जिसने आकाश में राशि चक्र बनाये तथा उस में सूर्य और

يَضْرُهُمْ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

وَوَكَّلْ عَلَىٰ النَّبِيِّ الَّذِي لَا يُؤْمِنُ وَيَسْتَعِزُّ بِعَمِيدٍ ۝  
وَكَفَىٰ بِهِ بَذْنُكَ عِبَادًا وَخَيْرًا ۝

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي  
سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ الرَّحْمَنُ فَسَأَلْ  
بِهِ خَيْرًا ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا  
الرَّحْمَنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا

1 अर्थात् कुर्आन पहुँचाने पर।



प्रकाशित चाँद को बनाया।

62. वही है जिस ने रात्रि तथा दिन को एक दूसरे के पीछे आते-जाते बनाया उस के लिये जो शिक्षा ग्रहण करना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे।

63. और अति दयावान् के भक्त वह है जो धरती पर नम्रता से चलते<sup>[1]</sup> हैं और अशिक्षित (अक्खड़) लोग उन से बात करते हैं तो सलाम करके अलग<sup>[2]</sup> हो जाते हैं।

64. और जो रात्रि व्यतीत करते हैं अपने पालनहार के लिये सज्दा करते हुये तथा खड़े<sup>[3]</sup> हो कर।

65. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! फेर दे हम से नरक की यातना को, वास्तव में उस की यातना चिपक जाने वाली है।

66. वास्तव में वह बुरा आवास और स्थान है।

67. तथा जो व्यय (खर्च) करते समय अपव्यय नहीं करते और न कृपण (कंजूसी) करते हैं और वह इस के बीच संतुलित रहता है।

68. और जो नहीं पुकारते हैं अल्लाह के साथ किसी दूसरे<sup>[4]</sup> पूज्य को और

وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ۝

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنۢ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيۦنَ يَمْشُوۡنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوۡنًا ۚ وَاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوۡنَ قَالُوۡا سَلٰمًا ۝

وَالَّذِيۦنَ يَسِيۡتُوۡنَ لِرَبِّهِمۡ سُجَّدًا وَّاقِيًا ۝

وَالَّذِيۦنَ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۚ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝

اِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّ مُقَامًا ۝

وَالَّذِيۦنَ اِذَا اَنۡفَعُوۡا لِمٰ يُسِرُّوۡا وَاَوْۤا لِمۡ يَفۡتُرُوۡا ۚ وَكَانَ بَيۡنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝

وَالَّذِيۦنَ لَا يَدۡعُوۡنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ

1 अर्थात घमंड से अकड़ कर नहीं चलते।

2 अर्थात उन से उलझते नहीं।

3 अर्थात अल्लाह की इबादत करते हुये।

4 अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

न बध करते हैं उस प्राण को जिसे अल्लाह ने वर्जित किया है परन्तु उचित कारण से, और न व्यभिचार करते हैं। और जो ऐसा करेगा वह पाप का सामना करेगा।

وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ  
وَلَا يَزْنُونَ فَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۝

69. दुगनी की जायेगी उस के लिये यातना प्रलय के दिन, तथा सदा उस में अपमानित<sup>[1]</sup> हो कर रहेगा।

يُضَعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ  
مُهْلًا ۝

70. उस के सिवा जिस ने क्षमा याचना कर ली, और ईमान लाया तथा कर्म किया अच्छा कर्म, तो वही है बदल देगा अल्लाह जिन के पापों को पुण्य से। तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ  
يَبْدِلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا  
رَحِيمًا ۝

71. और जिस ने क्षमा याचना कर ली और सदाचार किये तो वास्तव में वही अल्लाह की ओर झुक जाता है।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ  
مَتَابًا ۝

72. तथा जो मिथ्या साक्ष्य नहीं देते, और जब व्यर्थ के पास से गुजरते हैं तो सज्जन बन कर गुजर जाते हैं।

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ  
مَرُّوا كِرَامًا ۝

73. और जब उन्हें शिक्षा दी जाये उनके पालनहार की आयतों द्वारा उन पर नहीं गिरते अन्धे तथा बहरे हो<sup>[2]</sup> करा।

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا  
صُمًّا وَعُمْيَانًا ۝

प्रश्न किया कि कौन सा पाप सब से बड़ा है? फरमाया: यह कि तुम अल्लाह का साझी बनाओ जब कि उस ने तुम को पैदा किया है। मैं ने कहा: फिर कौन सा? फरमाया: अपनी संतान को इस भय से मार दो कि वह तुम्हारे साथ खायेगी। मैं ने कहा: फिर कौन सा? फरमाया: अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करना। यह आयत इसी पर उतरी। (देखिये: सहीह बुखारी, 4761)

1 इब्ने अब्बास ने कहा: जब यह आयत उतरी तो मक्का वासियों ने कहा: हम ने अल्लाह का साझी बनाया है और अवैध जान भी मारी है तथा व्यभिचार भी किया है। तो अल्लाह ने यह आयत उतारी। (सहीह बुखारी, 4765)

2 अर्थात् आयतों में सोच-विचार करते हैं।

74. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों तथा संतानों से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें आज्ञाकारियों का अग्रणी बना दे।

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا  
وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۝

75. यही लोग उच्च भवन अपने धैर्य के बदले में पायेंगे, और स्वागत किये जायेंगे उस में आशीर्वाद तथा सलाम के साथ।

أُولَٰئِكَ يَجْزُونَ الْعُرَّةَ بِمَا صَبَرُوا وَيَلْقَوْنَ فِيهَا  
حَبَّةً وَسَلَامًا ۝

76. वे उस में सदावासी होंगे, वह अच्छा निवास तथा स्थान है।

خَالِدِينَ فِيهَا أَحَدَتْ مُسْتَقَرًّا أَوْ مَقَامًا ۝

77. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि तुम्हारा उसे पुकारना न<sup>[1]</sup> हो तो मेरा पालनहार तुम्हारी क्या परवाह करेगा? तुम ने तो झुठला दिया है, तो शीघ्र ही (उसका दण्ड) चिपक जाने वाला होगा।

قُلْ مَا يَعْبُؤُا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ  
كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۝

1 अर्थात् उस से प्रार्थना तथा उस की इबादत न करो।